सुभद्राकुमारी चौहान के काव्य में राष्ट्रवाद

डॉ. आर.पी. वर्मा,
असि. प्रो. एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग,
इन्दिरा गॉंधी राजकीय महिलामहाविधालय,
रायबरेली, उ.प्र.

स्वतंत्रता संग्राम की सक्रिय सेनानी, राष्ट्रीय चेतना की अमर गायिका तथा वीर रस की एकमात्र हिन्दी कवयित्री श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म सन 1904 ई0 में इलाहाबाद के एक सम्पन्न परिवार में हुआ था। वे प्रयाग के क्रॉस्थवेट गर्ल्स कॉलेज की छात्रा थीं। 15 वर्ष की अवस्था में उनका विवाह खण्डवा (म0प्र0) के ठाकुर लक्ष्मणसिंह चौहान के साथ हुआ। विवाह के बाद सुभद्राजी के जीवन में नवीन मोड़ आया। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी से प्रभावित होकर वे पढ़ाई–लिखाई छोड़कर देशसेवा के लिए तत्पर हो गईं तथा राष्ट्रीय कार्यों में सक्रिय भाग लेती रहीं। देश की स्वतंत्रता के लिए इन्होंने कई बार जेल यात्रा की। सुभद्राजी की झांसी की रानी और वीरों का कैसा हो बसन्त? शीर्षक कविताएं आज तक लाखों युवकों के हृदयों में वीरता की ज्वाला धधकती रही हैं।

साहित्यिक तथा राजनैतिक कार्यों में सुभद्राजी को माखनलाल चतुर्वेदी से विशेष प्रोत्साहन मिला। इस प्रोत्साहन के परिणामस्वरूप इनकी देशभक्ति का रंग और भी गहरा व व्यापक हो गया। सन् 1948 ई0 में एक मोटर–दुर्घटना में स्वतंत्रता की इस पुजारिन की असामयिक मृत्यु हो गई।

सुभद्राजी देशप्रेम की भावना को काव्यात्मक स्वर प्रदान करने वाली कवयित्री के रूप में विख्यात है। उनकी ओजपूर्ण वाणी ने भारतीयों में नवचेतना का संचार किया और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में बलिदान देने के लिए प्रेरित किया। मात्र झांसी की रानी शीर्षक पर आधारित उनकी कविता ही उन्हें अमर कर देने के लिए पर्याप्त है। वीरों का कैसा हो बसन्त? नामक उनकी कविता भी राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत कर देने वाली इसी प्रकार की एक अन्य ओजपूर्ण कविता है। राष्ट्रीय भावनाओं पर आधारित काव्य के सृजन के साथ ही सुभद्राजी ने वात्सल्य भाव पर आधारित कविताओं की रचना भी की। इन कविताओं में उनका नारी सुलभ मात्र भाव दर्शनीय है। दाम्पत्य प्रेम पर आधारित इनकी प्रणय भावना में वासनात्मक भावों का सर्वथा अभाव दृष्टिगोचर होता है।

आधुनिक हिन्दी साहित्य स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्रवाद की भावना से ओतप्रोत है, जो भारत के बदलते हुए ऐतिहासिक घटनाक्रमों से प्रभावित है। राष्ट्रवाद और देशप्रेम सुभद्राकुमारी चौहान जी के रग रग में भरा हुआ था। इसलिए उनकी कविताओं में राष्ट्रप्रेम और वीर रस भरपूर मात्रा में देखने को मिलता है। राष्ट्रीय कविताओं की दृष्टि से उनकी 'जलियावालां बाग में बसंत' 'राखी' 'विजयदशमी' 'लक्ष्मीबाई की समाधि पर' और 'वीरों का कैसा हो बसंत' आदि कविताओं में सुभद्र जी का राष्ट्रप्रेम और राष्ट्रवाद झलक उठता है। राष्ट्रीय कविता की कतार में उनकी 'झांसी की रानी' अत्यंत लोकप्रिय है। और उसी एक कविता से ही सुभद्रा जी संपूर्ण देश भर में छा गई थीं। सुभद्राकुमारी चौहान का जन्म इलाहाबाद में हुआ था। 15 वर्ष की अवस्था में उनका विवाह खण्डवा के वकील लक्ष्मण सिंह चौहान से हो

गया। पति पत्नी दोनों ही राष्ट्रीय विचारधारा के होने के कारण महात्मा गांधीजी से प्रभावित होकर, अपना घरबार त्यागकर स्वतंत्रता के आंदोलन में कूद पड़े। इसीलिए इन्हें कई बार जेल भी जाना पड़ा। दोनों पति पत्नी मन प्राण से कांग्रेस का काम करने लगे। सुभद्रा महिलाओं के बीच जाकर स्वाधीनता संग्राम का संदेश पहुचाने लगीं। वे उन्हें स्वदेशी वस्तुओं को अपनाने, पर्दा छोड़ने, छुआछूत और ऊंच–नीच की संकीर्ण भावनाओं से ऊपर उठने की सलाह देती थी। स्त्रियां सुभद्र की बातें बड़े ध्यान से सुनती थीं। 1920–21 में मध्यवर्ग की बहुओं में प्रगतिशील मूल्यों का संचार करने में सुभद्र ने बहुत बड़ी भूमिका निभाई।

सुभद्राजी की कविताअें में देश प्रेम की भावना और मातृत्व ही मूल आधार है। उनकी कविता 'झांसी की रानी लक्ष्मीबाई' के 'खूब लड़ी मरदानी वह तो झांसी वाली रानी थी।' सुनकर आज भी हम देश भक्ति की भावना से हर्षित हो उठते हैं। सुभद्राकुमारी की कविता झांसी की रानी महानीवन की महागाथा है। कुछ पंक्तियों की इस कविता में उन्होंने एक विराट जीवन का महाकाव्य ही लिख दिया है। इस कविता में लोक जीवन से प्रेरणा लेकर लोक आस्थाओं से उधार लेकर जो एक मिथकीय संसार उन्होंने खड़ा किया है उससे झांसी की रानी के साथ सुभद्रा जी भी एक किंवदंती बनगई हैं। भारतीय इतिहास में यह शौर्यगीत सदा के लिए स्वर्णिम अक्षरों में अंकित हो गया है।

सिंहासन हिल उठे राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में भी आई फिर से नयी जवानी थी,
गुमी हुई आजादी की कीमत सबने पहचानी थी,
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी।
चमक उठी सन सत्तावन में, वह तलवार पुरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुंह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी।

इनकी भाषा सरल तथा शुद्व खड़ी बोली है। देश के लिए कर्तव्य और समाज की जिम्मेदारी संभालते हुए उन्होंने व्यक्तिगत स्वार्थ की बलि चढ़ा दी 'न होने दूंगी अत्याचार, चलो मैं हो जाऊं बलिदान'

'जलियावाला बाग' के नृशंस हत्याकांड से उनके मन पर गहरा आघात लगा। उन्होंने तीन आग्नेय कविताएं लिखीं। जलियांवाला बाग में बसंत में उन्होंने लिखा–

परिमलहीन पराग दाग सा बना पड़ा है
हा! यह प्यारा बाग खून से सना पड़ा है।
आओ प्रिय ऋतुराज! किंतु धीरे से आना
यह है शौक स्थान यहां मत शोर मचाना।
कोमल बालक मरे यहां गोली खा–खाकर।
कलियां उनके लिए गिराना थोड़ी लाकर।

1922 का जबलपुर का झंडा सत्याग्रह देश का पहला सत्याग्रह था और सुभद्रा जी की पहली महिला सत्याग्रही थीं। राज रोज सभाएं होती थीं और जिनमें सुभद्र भी बोलती थीं। टाइम्स ऑफ इण्डिया के संवाददाता ने अपनी एक रिपोर्ट में उनका उल्लेख लोकल सरोजिनी कहकर किया है।

प्रसिद्ध हिंदी कवि गजानन माधव मुक्तिबोध ने सुभद्रा जी के राष्ट्रीय काव्य को हिंदी में बेजोड़ माना है कुछ विशेष अर्थों में सुभद्रा जी का राष्ट्रीय काव्य हिंदी में बेजोड़ है। राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय भागीदारी और अनवरत जेल यात्रा के बावजूद उनके तीन कहानी संग्रह प्रकाशित हुए बिखरे मोतती, उन्मादिनी, सीधे सादे चित्र। वह स्वतंत्रता नहीं स्वराज्य चाहती है। परतंत्रता नहीं, स्वानुशासन चाहती हैं। रूढ़ियों बंधनों से मुक्त होकर वह स्वनियंत्रण में रहना

चाहती हैं। सुभद्रा जी की सभी कहानियों को हम एक तरह से सत्याग्रही कहानियां कह सकते हैं। उनकी स्त्रियां सत्याग्रही स्त्रियां हैं। दलित चेतना और स्त्रीवादी विमर्श को उठाने वाली सुभद्राकुमारी हिंदी की पहली रचनाकार हैं–

'दिखा गई पथ, सिखा गई हमको जो सीख
सिखानी थी।'

पंद्रह अगस्त 1947 को जब देश आजाद हुआ तो सबने खुशियां मनाई। सुभद्रा जी ने भेड़ाघाट जाकर वहां के खान मजदूरों को कपड़े और मिठाई बांटी। उस दिन वे अपना सिरदर्द भूल गई थीं। थकावट भूल गई थीं, आराम करना भूल गई थीं।

गांधी जी की हत्या से सुभद्रा जी को ऐसा लगा कि जैसे वे सचमुच अनाथ हो गई हों। बर्गर कुछ खाए–पिए चार मील पैदल ग्वारीघाट तक गईं। जैसे कोई उनके घर का चला गया हो। सुभद्रा जी ने कहा, मैनें तो सोचा था कि मैं कुछ दिन गांधी जी के आश्रम में बिताउंगी लेकिन परमात्मा को वह भी मंजूर नहीं था।

सुभद्रा जी की खिलौनेवाला कविता में उनकी देशभक्ति उमड़ पड़ी है–

मैं तो तलवार खरीदूंगा मां
या मैं लूंगा तीन कमान
जंगल में जा, किसी ताड़का
को मारूंगा राम समान।

सुभद्रा जी की काव्य साधना के पीछे उत्कट देश प्रेम, अपूर्व साहस तथा आत्मोत्सर्ग की प्रबल कामना है। इनकी कविता में सच्ची वीरांगना का ओज और शौर्य प्रकट हुआ है। हिंदी काव्य जगत में ये अकेली ऐसी कवियत्री है जिन्होंने अपने कंठ की पुकार से लाखों भारतीय युवक–युवतियों को युग युग की अकर्मण्य उपासी को त्याग, स्वतंत्रता संग्राम में अपने को समर्पित कर देने के लिए प्रेरित किया। वर्षों तक सुभद्रा जी की 'झांसी वाली रानी थी' और 'वीरों का कैसा हो बसंत' शीर्षक कविताएं लाखों तरूण तरूणियों के हृदय में आग फूंकती रहेंगी। झांसी की रानी की समाधि पर में सुभद्रा जी का वीर रस उमड़ पड़ता है।

इस समाधि में छिपी हुई है, एक राख की ढेरी।
जब कर जिसने स्वतंत्रता की, दिव्य आरती फेरी।
यह समाधि यह लघु समाधि है, झांसी की रानी की।
अंतिम लीलीस्थली यही है, लक्ष्मी मरदानी की।

कार दुर्घटना में सुभद्रा कुमारी चौहान का देहांत 15 फरवरी 1948 को 44 वर्ष की आयु में ही हो गया। परंतु हिन्दी साहित्य ही अपितु सारा देश सुभद्रा जी कभी नहीं भूल सकता। उनका देशप्रेम और राष्ट्रवाद हम सब के लिए ऊर्जा बन गयी है। ऐसे महान व्यक्तित्व को हमारा शत शत प्रणाम।

संदर्भ

- ✓ झांसी की रानी–सुभद्राकुमारी चौहान पृष्ठ सं0 33
- ✓ उन्मादिनी– सुभद्राकुमारी चौहान पृष्ठ सं0 56
- ✓ त्रिधारा– सुभद्राकुमारी चौहान पृष्ठ सं0 78
- ✓ हमारे प्रतिनिधि कवि और लेखक–डॉ. राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी पृष्ठ सं0 89
- ✓ अंतर्जाल पृष्ठ सं0 77
- ✓ हिन्दी साहित्य का वस्तुपरक इतिहास–डॉ. राम प्रसाद मिश्र पृष्ठ सं0 56

✓ सुभद्राकुमारी चौहान का व्यक्तित्व एवं कृतित्व–डॉ. आर.पी.वर्मा पृष्ठ सं0 90

Copyright © 2014, Dr. R.P.Verma. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.